मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान।

माह - दिसम्बर २०१८

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष - १ अंक - ६

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-६

माह-दिसम्बर २०१८

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन एवं मुख्यपृष्ठ

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

जीतोड़ मेहनत और उसके बाद भी नकारात्मक छवि। इसे दुर्भाग्य कहूँ या विडम्बना समझ नहीं आता। लेकिन यह जो भी है शिक्षक पद के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए आज के समय में शिक्षकों के लिए उनके कर्त्तव्य निर्वहन के साथ अगर कुछ आवश्यक है तो वो है शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों का समाज के आगे आना।

कभी नहीं सोचा गया था कि एक ऐसा मंच भी होगा जहाँ ऐसे शिक्षक सामने आएँगे जो अपने विद्यालयों में तो श्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे ही साथ ही अन्य शिक्षकों को भी ऐसा प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध करेंगे। लेकिन ऐसा हुआ और कल्पना के तमाम दायरों को तोड़कर हुआ। आज बहुत प्रसन्नता होती है जब देखता हूँ कि मिशन शिक्षण संवाद प्रतिमाह एक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। सबसे रोचक बात तो ये है कि पत्रिका ऑनलाइन उपलब्ध है। आज के समय में जब सभी मोबाइल स्क्रीन पर घण्टों फेसबुक या व्हाट्सएप्प चलाने में बिताते हैं। ऐसे में शिक्षण संवाद पत्रिका उनके सामने एक विकल्प बनकर उभरी है। जहाँ ज्ञानोपयोगी व शिक्षाप्रद स्तम्भ हैं। एक–दूसरे से प्रेरणा लेकर कुछ नया सीखने वालों के लिए ये पत्रिका एक वरदान की भाँति है।

यह पत्रिका बेसिक शिक्षा से जुड़ा एक नियमित साहित्य है। इसके प्रेरक प्रसंग और बाल साहित्य जैसे स्तम्भ अत्यंत उपयोगी हैं। माह का सर्वश्रेष्ठ टीएलएम हो या माह के दिवस सबमें ज्ञान भरा पड़ा है। मैं पत्रिका की पूरी टीम को बधाई देता हूँ तथा ऐसी शुभकामनाएँ प्रेरित करता हूँ कि पत्रिका का ये छठा अंक भी अपने पूर्ववत अंकों की भाँति अत्यंत सफल हो।

(श्याम प्रकाश)
खण्ड शिक्षा अधिकारी
शिक्षा क्षेत्र कुरारा
जनपद हमीरपुर

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

दिसम्बर आते ही साल की विदाई का जश्न शुरू हो जाता है, साथ ही शुरू हो जाती है एक नये साल के स्वागत की तैयारी। यह एक ऐसा समय होता है जब हम आत्ममंथन करते हैं कि साल भर हमने क्या पाया, क्या खोया? क्या कर सकते थे, क्या कर पाये और आगे क्या कर सकते हैं? देखा जाए तो दिसम्बर वर्ष का खत्म होना नहीं है बल्कि एक अवधि का पूर्ण होना होता है।

इस साल भी मिशन शिक्षण संवाद ने भी बहुत कुछ पाया है। कुछ शेष भी रह गया। लेकिन मिशन ने जो पाया है उसमें महत्त्वपूर्ण है निरन्तर साथियों की वृद्धि, विश्वास और शिक्षण के प्रति सकारात्मक सोच का विस्तार। इन्हीं उपलब्धियों में एक उपलब्धि है प्रतिमाह ''शिक्षण संवाद'' पत्रिका का ऑनलाइन प्रकाशन। 'शिक्षण संवाद' पत्रिका मिशन द्वारा किये जा रहे प्रमुख कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य बनकर उभरी है। पत्रिका आज उन शंकाओं से ऊपर उठ चुकी है जो कभी मन में उठी थीं कि यह पत्रिका सफल होगी या नहीं। आप सभी ने पत्रिका को हाथों–हाथ लिया और मिशन की इस मुहिम में एक नया नाम जुड़ गया। आज जब किसी उच्चाधिकारी या समाज के किसी सम्मानित व्यक्ति के समक्ष हमें अपने कार्य को दिखाना होता है तो उसे भेंटस्वरूप हम ''शिक्षण संवाद'' नामक पत्रिका प्रदान करते हैं। जो एक सकारात्मक संदेश समाज में देती है इसीलिए इसके प्रत्येक स्तम्भ को बड़ी सावधानी और गहनता से बनाने का प्रयास किया जाता है। प्रेरक प्रसंग, बाल साहित्य, उपस्थिति अभियान आदि महत्वपूर्ण स्तंभों के साथ पत्रिका का दिसम्बर अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

आशा है कि आप सभी का सहयोग, प्रेम और प्रोत्साहन गतांकों की भाँति मिलता रहेगा। जिससे मिशन परिवार को कुछ नया और प्रेरक करने की शक्ति आप सभी से शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए मिलती रहेगी।

आपका

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7
प्रदेश में बढ़ते स्मार्ट स्कूलों की संख्या	
एक सुखद संदेश	8
मिशन गीत	9
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	10–12
निन्दक नियरे राखिए	13
टी.एल.एम.संसार	14
इंग्लिश मीडियम डायरी	15–16
शिक्षण गतिविधि	17–18
प्रेरक–प्रसंग	19
सद्विचार	20
बाल फिल्म	21
बच्चों का कोना	22–23
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	24
माह का मिशन	25
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	26
कस्तूरबा विशेष	27–28
योग विशेष	29
खेल विशेष	30
परिषदीय विद्यालयों के कायाकल्प को समर्पित एक दानवीर	31–32
महत्वपूर्ण दिवस	33
शिक्षण तकनीकी	34
मिशन हलचल	35–36
मिशन उपस्थिति	37
दैनिक श्यामपट्ट कार्य–सफलतम एक वर्ष	38
टीचर्स–क्लब कार्नर	39

विचारशक्ति

शिक्षा ही मनुष्य को सम्पूर्णता प्रदान करती है

–डॉ0 रंजना वर्मा

शिक्षा ही मनुष्य को सम्पूर्णता प्रदान करती है।

यह सूक्ति हर पल सत्य चरितार्थ होती है। कभी कल्पना करिये यदि हम शिक्षित न होते तो संसार के तमाम विषयों, भाषाओं, अनगिनत विचारों, मान्यताओं, धर्मों, संस्कारों व नवीन आविष्कारों से स्वयं को कभी अवगत ही न करा पाते और अधूरे व्यक्तिव के साथ यह जीवन जीते रहते। स्वयं को समर्थ बनाने, अपने तथा दूसरों के व्यक्तित्व को नया आयाम देने का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों को पूर्णता प्रदान करती है। मनुष्य अनेक पाश्विक प्रवृतियों के साथ जन्म लेता है, मगर परिवार समाज, विद्यालय, शिक्षक सबके सानिध्य में आकर अपने व्यवहार को परिष्कृत तथा परिमार्जित करता है। शिक्षा मनुष्य को सोचने समझने, तर्क करने के साथ ही इहलोक व परलोक का भी ज्ञान प्रदान करती है। हम सब चाहें अपने बच्चों को कम खिलायें पर शिक्षारूपी ज्ञान से अवश्य पोषित करें क्योंकि हमारी भावी पीढ़ी यदि शिक्षित व संस्कारवान होगी तो दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने से कोई नहीं रोक सकेगा। आज भूमंडलीकरण के दौर में शिक्षा ही वह हथियार है जो सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरो सकती है। दुनिया को बदलने का एकमात्र उपाय विचारों में बदलाव लाना है और यह कार्य शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है, तो एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सबका एक ही नारा होना चाहिए–

शिक्षित बनकर, बदलो सोच
सम्पूर्णता में करो प्रवेश।

अनेक विद्वानों ने शिक्षा को परिभाषित किया और सबने यह माना कि शिक्षा मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को बदलने तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, मानसिक शारीरिक आदि सभी पहलुओं में सामर्थ्यवान बनाने में सक्षम है। मनुष्य में अनेक सम्भावनाएँ छिपी हैं और उन सम्भावनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य शिक्षा के द्वारा किया जाता है। शिक्षा संस्कारों की जननी भी है और पोषक भी, हमारी उत्पति से लेकर उन्नति तक का मार्ग प्रशस्त करती है शिक्षा। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली एक महत्वपूर्ण प्रकिया है।किसी भी व्यक्ति, समाज या संस्कृति का उत्थान शिक्षा के बिना अधूरा है। शिक्षा के साथ शिक्षक की भूमिका अत्यंत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सीख को यदि बेहतर ढंग से देने वाला मिल जाए तो जीवन में चार चाँद लगते देर नही लगेगी। एक शिक्षक के कंधों पर बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण का भार है और साथ ही दुनिया को निरन्तर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाने का भी।

आज यदि हम उन्नत समाज और सुनहरे भविष्य का सपना संजोते हैं तो सिर्फ शिक्षा के माध्यम से ही यह पूरा हो सकता है। तो आइये मिलकर एक शिक्षित संस्कारवान समाज के निर्माण में अपना अतुलनीय सहयोग दें व जीवन को शिक्षा रूपी प्रकाश से प्रकाशित करें।

□□□

डॉ0 रंजना वर्मा,
प्राथमिक विद्यालय बूढ़ाडीह– 1,
विकास खण्ड–भटहट,
जनपद–गोरखपुर।

प्रदेश में बढ़ते स्मार्ट क्लास स्कूलों की संख्या एक सुखद संदेश

शिक्षकों को ऊर्जा से लबरेज कर रहा शिक्षा निदेशक सहित प्रदेश के उच्चाधिकारियों का सकारात्मक मोटिवेशन

—डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र

वर्तमान में प्रदेश के सभी 75 जनपदों में विभिन्न शिक्षकों द्वारा अपने स्कूलों को स्मार्ट स्कूल के रूप में बदलने की होड़ सी लग गई है। इन शिक्षकों द्वारा जनसहयोग और स्वयं के खर्च से अपने स्कूलों के भौतिक परिवेश को न केवल सुंदर एवम आकर्षक बनाया जा रहा है बल्कि पढ़ाई को सरल एवं मनोरंजक बनाने व शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपने स्कूलों में स्मार्ट क्लासों की स्थापना कर एक नई लकीर खीचने का काम किया जा रहा है। ऐसे शिक्षकों के इस तरह के कार्यों को और बल मिला है प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह जी के सकारात्मक मोटिवेशन का। शिक्षा निदेशक महोदय द्वारा प्रदेश के विभिन्न जनपदों में नवाचारों, स्मार्ट क्लास और भौतिक परिवेश में बेहतर काम कर रहे शिक्षकों को प्रतिदिन अपने ट्विटर एकाउंट से रिट्वीट कर उनका उत्साहवर्धन करने से ऐसे शिक्षक रोजना कुछ न कुछ नया और अच्छा करने की होड़ में लग गए है।

वर्तमान में शिक्षा निदेशक द्वारा सभी जनपदों में स्मार्ट क्लास सुविधा वाले ऐसे शिक्षकोंध्स्कूलों की तलाश कर उन्हें समानित करने की जी प्रक्रिया चलाई जा रही है, उसके सुखद परिणाम देखने को मिल रहे है। शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह जी के इस अभियान को अपर शिक्षा निदेशक सुश्री ललिता प्रदीप जी और गति दे रही हैं जो लगातार ऐसे शिक्षकों को मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें प्रदेश व देश के विभिन्न मंचों पर अपनी बात और सन्देश रखने के साथ ही सम्मानित होने का अवसर दे रही हैं। इसी तरह एससीईआरटी के संयुक्त निदेशक श्री अजय सिंह जी द्वारा एससीईआरटी द्वारा गत 2 वर्षों से आईसीटी प्रतियोगिता के माध्यम से प्रदेश में स्मार्ट क्लासों की संख्या बढ़ाने में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

शिक्षा निदेशक कार्यालय की विभागीय सूचनाओं के अनुसार प्रदेश के सभी 75 जनपदों में अभी तक लगभग 1500 से अधिक स्कूलों में स्मार्ट क्लास की स्थापना हो चुकी है। जहाँ हजारों की संख्या में बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्रदेश के परिषदीय स्कूलों में जितने भी स्कूलों में स्मार्ट क्लास बने हैं उनमें अधिकांशतः शिक्षकों द्वारा खुद के प्रयास से लगाये गए हैं।

स्मार्ट क्लास वाले ऐसे स्कूलों के शिक्षकों का मनोबल बढ़ाने और दूसरे शिक्षकों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करने हेतु वर्तमान में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा मंडल और प्रदेश स्तर पर चयन कर सम्मानित करने की प्रक्रिया चल रही है। जिसके कारण लगातार जिलों में प्रतिदिन स्मार्ट क्लास सुविधा वाले स्कूलों की संख्या बढ़ रही है। वह दिन दूर नही जब हर जनपद में सैकड़ों की संख्या में स्मार्ट क्लास सुविधा वाले स्मार्ट स्कूल समाज को परिषदीय विद्यालयों में सकारात्मक बदलाव और उसकी सफलता का सन्देश देंगे।

□□□

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
(लेखक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र सन 2016 में बस्ती मण्डल की पहली स्मार्ट क्लास शुरू करने वाले आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती के राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त शिक्षक हैं।)

मिशन गीत

आओ प्यारे साथ हमारे।

—रघुनाथ द्विवेदी

आओ प्यारे साथ हमारे।
शिक्षा के हित सांझ सकारे।।
लोक हितैषी सेवा शिक्षा,
निहित हो जहाँ ''मिशन शिक्षण संवाद'' की दीक्षा।
मिशन नीति का उच्च लक्ष्य है,
सबसे उत्कृष्ट हो हमारी ये परीक्षा।
उठो शिक्षा के सच्चे सेवक,
शिक्षक, साथी और प्रदर्शक।
बुला रहा है कार्य लोकहित,
अब है सबकी अग्निपरीक्षा।
साथ हमारे मिशन की सेवा,
जैसे लड्डू,रबड़ी, मेवा।
कार्य नहीं अभियान बना लो,
अब करनी है देश की सेवा।
हर अंतर्मन अब यही पुकारे,
आओ प्यारे साथ हमारे,
शिक्षा के हित सांझ सकारे।
शिक्षक के हित सांझ सकारे।
शिक्षण के हित सांझ सकारे।

□□□

रघुनाथ द्विवेदी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गुरौली,
जनपद—कौशाम्बी।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

मोहम्मद आरिफ सिद्दीकी,
प्र.अ. प्राथमिक विद्यालय रुरुगंज प्रथम, विकास खण्ड बिधूना, जनपद – औरैया

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_82.html

अनिता कुशवाहा,
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय खगईजोत द्वितीय, बलरामपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_17.html

केशव प्रसाद सिंह,
(HT), PS डोमपुर, महाराजगंज, जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/ht-ps.html

धीरज कुमार सिंह,
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय फत्तूपुर, भदोही

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_93.html

प्रतिभा पटेल,
(प्र.अ), प्राथमिक विद्यालय लुडहा, क्षेत्र व जनपद– चित्रकूट

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/httpsm_17.html

टिकेश्वर प्रसाद,
रा० प्रा० वि० घिरोली, बेतालघाट, नैनीताल, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_81.html

विपिन कुमार सिंह
प्रा०वि० चौहड़पुरमाफी वि०क्षे०– गजरौला, जनपद –अमरोहा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_49.html

सुमनलता वर्मा
Assistant Teacher, E.M.P.S. Dareeba, Block-Sataon, District-Raebareli

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/suman-lata-verma-assistant-teacher-emps.html

अभिषेक विश्नोई
प्राथमिक विद्यालय मुख्त्यारपुर नवादा द्वितीय, विकास खण्ड– छजलैट, जनपद–मुरादाबाद

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_83.html

राधा यादव
(प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय झाबर का पुर्वा, वि०ख–भाग्यनगर, जनपद–औरैया

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_63.html

ओम प्रकाश
(प्रधानाध्यापक) प्राथमिक विद्यालय सोबरी, ज्ञानपुर, भदोही (उत्तर प्रदेश) 221308

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/221308.html

शकुन गुप्ता
(प्र०अ०) मॉडल प्राइमरी स्कूल गंगावाला, विकासखंड – स्वार, जनपद – रामपुर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_647.html
दीपा आर्य,
प्रधानाध्यापिका, रा० प्रा० वि० लमगड़ा, जनपद–अल्मोड़ा, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_675.html

रमेश चन्द्र जोशी
(सत्यम जोशी) रा० प्रा० वि० जारा धारचूला, पिथौरागढ, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_30.html

डॉ० उषा सिंह
(प्रधानाध्यापिका) इंग्लिश मीडियम प्रा०वि० चकताली, विकास क्षेत्र– सिरकोनी, जनपद– जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_38.html

मकसूद अहमद सिद्दीकी
(प्र०अ०) पूर्व माध्यमिक विद्यालय करमैनी, पिपराइच, गोरखपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_12.html

राहुल शर्मा
(प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय दूधली बुखारा बलियाखेड़ी, सहारनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_41.html

निन्दक नियरे राखिए

—विभव प्रताप

मन तो मेरा भी करता है कभी–कभी कि छोड़ दूँ बेसिक क्योंकि यहाँ आराम कम झल्लाहट ज्यादा है लेकिन फिर मन ठिठक जाता। मुझसे मैं ही सवाल करने लगता हूँ कि क्या इसीलिए बीटीसी किया था? क्या बच्चे प्यारे नहीं लगते? क्या उनकी गरीबी उनका भूख उनकी अस्वच्छता से तंग आ गया हूँ? सोचो कि वे फिर कैसे जी रहे?

जब कभी पहाड़ो–नालों से गुजरते वक्त बाइक फिसल जाए फिर एकदम से हूक निकल जाए और धड़कन सौ की स्पीड में भागने लगे तो मन करता है छोड़ दूँ बेसिक विद्यालय लेकिन तभी एक मुस्कुराता हुआ चेहरा झोला घुमाता हुआ पानी में पैर से छपाक–छपाक करता हुआ बढ़ा जाता है स्कूल की तरफ। वह बच्चा बिना बोले जैसे पूछ ही लेता है सर जी ठीक तो हो? सम्भल के चला करो!

कभी जब दस मिनट लेट पहुँचो और अधिकारी डाँट देता है ऑफिस में तो मन करता है छोड़ कर बेसिक। करूँ तैयारी और बन जाऊँ SDM तब इनकी खैर नहीं लेकिन तभी खिड़की से झाँकती 'शंखी' मानो कह रही हो चिल सर जी चिल और मैं मुस्कुरा कर सॉरी बोल देता हूँ अधिकारी से।

जब आप दो महीने सेवा दे चुके हो फिर भी एक रुपया न मिला हो तब उदास मन कहता है यार कब तक उधार लेकर खाता रहेगा? तब झल्लाहट बेसिक छोड़ने को कहती है तभी 'सुरेश' स्कूल के बाद मछली मारता नजर आता है जो कई दिनों से सब्जी नहीं खाया है और तल्लीन है काम में।

जब पैसे न हो तब प्रभारी आलू–लौकी ले आने के लिए कहे तो खाली जेब पलटकर जवाब देने के लिए कहता है लेकिन तभी 'भूखे भजन न होत गोपाला' दोहा याद आ जाता है। तब उन बच्चों के लिए सब सहने को तैयार हो जाता हूँ। गरीबों के लिए भूख का स्वाद मीठा नहीं होता साहब।

दस बार ABCD पढ़ाने के बाद भी जब बच्चे एक भी अक्षर नहीं बता पाते तब अंदर से एक प्रश्न उठता है कि यार बेसिक में तो जो कुछ आता है लगता है एकदिन वह भी भूल जाऊंगा इसीलिए छोड़ दूँ क्या? तभी अमरजीत कहता है सर ABCD याद हो गया। मेरी मेहनत सफल हो जाती है।

स्कूल की जब आधारभूत जरूरतें आप को सताएँ या स्कूल बिल्कुल भी आकर्षक न हो तब मन करता है छोड़ दूँ क्या? लेकिन तभी स्कूल में बच्चों की संख्या में बेहतरीन बढ़ोत्तरी आप को सुकून देगी। आप प्रसन्न हो उठोगे। रंगहीन विद्यालय में भी खुशबू फैल उठेगी।

जब आपका दोस्त लेखपाल हो या VDO हो और आपसे अधिकार और शक्ति के मामले में खुद को बेहतर बताये और कहे कि लेखपालों को तो अधिकार है। विद्यालय चेक करने का। रिपोर्ट लगाने का। तब खुद को कमतर आंककर मन कर जाता है कि छोड़ दूँ क्या बेसिक? तभी याद आता है अपनी शक्ति का कि मैं तो हजारों लेखपाल VDO & SDM– नेता सब बना सकता हूँ।

ये तो चन्द उदाहरण है जो आपको हर पल कहते रहेंगे कि छोड़ दे यार बेसिक लेकिन बच्चों की मुस्कुराहट। बच्चों का लगाव। बच्चों का प्यार। बच्चों की भूख। बच्चों की गरीबी। बच्चों का समर्पण। बच्चों का त्याग। बच्चों की उम्मीद। बच्चों का भविष्य। बच्चों की जिंदगी आपको रोके रहेगी और आप यूँ ही अपने अभावों में भी रुके रहेंगे। डटे रहेंगे।

क्योंकि शायद आपकी भी मम्मी ने कहा हो ' बेटू मेहनत और मन से पढ़ाना। छोटे बच्चों का आशीर्वाद मिलेगा..... ।'

☐☐☐

विभव प्रताप
इंचार्ज प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय भडाही
ब्लॉक चोपन जिला सोनभद्र

Sentence Making Machine

–वर्तिका अवस्थी

Sentence Making Machine

कक्षा– 3

विषय– अंग्रेजी

आवश्यक सामग्री –पुराने शादी कार्ड्स,डिस्पोजल गिलास, एक बॉक्स, आइसक्रीम स्टिक, फेविकॉल इत्यादि।।

बनाने की विधि –

पहले पुराने शादी के कार्ड्स को **icecream** के आकार में काटते हैं।

आठ गिलास को 4–4 के सेट में रख देते हैं। एक सेट में पिक्चर पेस्ट करेंगे जिसे देखकर **sentence** बनाने के लिए बाकि 3 सेट में से एक में **subject** (He/She/They) लिखेंगे। दूसरे में **helping verbs** (is/are) लिखेंगे। तीसरे में **verbs** (क्रियाएँ) लिखेंगे।।

इन सभी को स्टिक में चिपकाकर आइसक्रीम रूप में तैयार कर लेंगे। अब एक पुराने बॉक्स को रंगीन पन्नी से सजाकर 8 डिस्पोजल ग्लास 4 सेट में रख देंगे।।

कार्य विधि – पहले सेट में रखे पिक्चर आइसक्रीम में से एक स्टिक आगे रखी गिलास में रखेंगे। जिसे देखकर छात्र से **subject** की उचित स्टिक निकालकर दूसरे सेट की गिलास में एवं उचित **helping verb** की स्टिक अगले गिलास में एवं चित्रानुसार एक्शन की **verb** को अगले सेट में स्टिक रखने को कहेंगे।।

इस प्रकार एक चित्र को देखकर छात्र एक **sentence** स्वयं बनाने का प्रयास करेगा।।

साभार

वर्तिका अवस्थी (प्र.अ.)

प्रा वि देवमई,मैनपुरी

उ.प्र.

English Medium Diary

ENGLISH TEACHING IN RURAL CONTEXT (CHALLENGES AND SOLUTIONS)

Chhavi agrawal
Assistant teacher
Primary school Banpurwa
English medium
Block Kashi vidya peeth
Varanasi

Teacher is the most important pillar of teaching process. A teacher must have efficiency of that level which can inculcate knowledge and essence among new generation.

His goal should be such foundation which is based on reinforcing applicable knowledge and effective personality building.

An effective controlling of teacher over the class depends upon knowledge he is having, and his contribution towards the process of learning. Coordination among teacher and student toward learning process and communication method used is the key to sucess in teaching of any subject.Here emphasis is on teaching of english,so

Let us dive deep into the world of english teaching.

While teaching english considerable points to keep in mind are -

➢what are the main objectives?

The main objective of the teaching is either the conversation, proficiency, reading, translation or just the completion of syllabus ?

➢What is the nature of language?And what would be the effect of that language on teaching?

➢What is the role of mother toungue in language teaching and what would be the contribution?

➢What methods can be adopted for efficient teaching? whether these methods can be idealized ?

➢ which is the best method and technique that should be pursued for particular class in rural context ?

It's an arduous task to teach English in Indian rural context and in this area there is a lot to do. For this building a strong Foundation is essential. In rural schools English education must be accomplished through creative ways so that with less stress in short duration a lot of knowledge could be given. children of our basic schools have immense abilities and aptitude but the right direction and guidance is lacking.When students will be able to understood practical use of English they will adopt it as their speaking language. For this collective efforts of teacher and Society is must. Some main problematic areas are-

Spellings :

At primary level students are unable to correctly spell the words. 26 alphabets has 44 sounds that's why children are confused. Place of that alphabet used decide it's sound.

Solution to Problem regarding Spellings

➢Correct rules for spelling should be told to students.

➢Spelling of New words must be practiced 4 to 5 times in groups.

➢Teacher should always spell correctly before students and help them to do so themselves

➢Practicing dictation can help a lot in this.

➢weekly poster of hard words should be pasted on classroom's wall.

Pronunciation:

Since the language is new to students they are not used to it they can't grasp easily. For Hindi children get 24 hours environment, but for English???

A period of 40 minutes for learning a new language is not enough. So whenever they listen they are unable to understand and further to speak or pronounce correctly.

Solution to Problem regarding pronunciation:

Student listens before speaking. The two prime components of learning language goes simultaneously.

The rule of the approach is to hear first then to speak or to produce.

➤To improve pronunciation focus must be on student's wrong pronunciation because in future it becomes extremely problem-oriented.
➤The teacher should always use correct pronunciation of words in front of students because the student follows the teacher . For this, teacher must check pronunciation of the new words before using.
➤Teacher should pay special attention to the new words based on vowels and consonant.
Grammar:
children were never taught about hindi grammar to use in their daily language. Language leads then grammar follows. In case of english children have no prior knowledge.
Solution to Problem regarding Grammar Best way to teach grammar is via storytelling . Without reference teaching grammar is a burden to students.
➤At primary level grammatical rules must be clearly explained to children.
➤To explain the configuration of sentences example of mother tongue should be given. parallel examples of sentences develops quick understanding.
➤A mixture of both Grammar translation method and the Situational method makes grammar teaching easy.
➤provide them more and more chances to listen you and to speak as well.
Handwriting:
children lack practice and they also lack interest in english .
Words are new to them they never heard of it.
When we are good at something we are encouraged to do it .
While we are bad,we hesitate to represent.

Solutions to Problem regarding Handwriting
Be a role model for students .
➤Teachers should present example of best writing on blackboard in front of them. So that they are encouraged to follow.
➤ primary students have confusion between b-d ,u-n., m-w and q-p
It should be cleared and practiced.
➤Teachers must focus that sentence should start from capital letters end with full stop .There should be proper gap between two words in any sentence.
➤Best handwriting should be praised and awarded to promote improvement.
Vocabulary:
some people have a natural aptitude for language and pick them up quickly.Children ofcourse absorb new languages much more easily than adults.
The difficulty of a language also depends on its similarity to their own language.It is easier to pick hindi if kid knows bhojpuri. Bcoz these both use many of the same roots, sounds , vocab and grammatical patterns.
But in case of switching to english over hindi it's difficult to find any connection.
Solution to Problems regarding Vocabulary:
➤New words must be explained with their meanings to students
➤ new words from the chapter should be written on blackboard. The words should be explained by symbol and pictures for memorising.
➤Brain storming is best way to enhance vocabulary.
➤Match the column ,fill in the blank ,choose the odd one are also useful for glossary addition.
➤Mind games ,Bingo , puzzles, Riddles and other games also enhance vocabulary.
3P's to keep in mind always helps a teacher to achieve his/her goal.
3 P's are
Plan
Prepare
Practice
PLAN STRATEGY FOR THE PROBLEM YOU FACE , PREPARE AND PRACTICE IN YOUR CLASS.
GOOD LUCK COLLEAGUES !!!

शिक्षण गतिविधि

प्रकाश संश्लेषण (लघु नाटिका)

–डॉ.खुर्शीद हसन

शिक्षण संवाद

यदि शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों की सक्रिय सहभागिता हो तो उन्हें नवीन ज्ञान देना आसान होता है और उनकी अध्ययन में रूचि बनी रहती है। इसी को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा एक लघु नाटिका लिखी गयी जिसे छात्रों के प्रभावपूर्ण प्रदर्शन ने सार्थक बना दिया। जिसका विवरण निम्नलिखित है :–

सुबह का समय सूर्योदय होने ही वाला है। एक राधा नाम की लड़की सुबह टहलने के लिये बगीचे में पहुँचती है और देखती है कि एक पेड़ बहुत उदास है। वह पेड़ के पास पहुँचती है और पेड़ से पूछती है –

राधा– पेड़ भैया , बड़े उदास लग रहे हो ।

पेड़– क्या बताऊँ ? बहुत भूख लगी है ।

राधा – तो खाना बनाकर खा क्यों नहीं लेते ?

पेड़– कैसे बनाऊँ? मुझे सुबह होने का इन्तजार करना होगा ।

राधा – क्यों ?

पेड़– क्योंकि बिना सूर्य के प्रकाश के में अपना भोजन नही बना सकता ।

राधा – तो तुम अपना भोजन कैसे बनाते हो ?

पेड़ – मैं अपना भोजन प्रकाश संश्लेषण द्वारा बनाता हूँ ।

राधा – प्रकाश संश्लेषण ?? ये प्रकाश संश्लेषण क्या होता है ?

पेड़ – प्रकाश संश्लेषण में चार चीजों की आवश्यकता होती है ।

पहला – सूर्य , दूसरा – हरित लवक , तीसरा – जल, चौथी – कार्बनडाई ऑक्साइड

(पेड़ सूर्य को सम्बोधित करते हुए)

सूर्य ओ सूर्य जल्दी आओ भाई अपने बारे में बताओ ।

सूर्य– नमस्कार! मैं सूर्य हूँ। पृथ्वी पर ऊर्जा का स्रोत हूँ। मैं पौधों का भोजन बनाने में सहायता करता हूँ।

पेड़ – दूसरा हरित लवक। हरित लवक ओ हरित लवक। जल्दी आओ भाई अपने बारे में बताओ।

हरित लवक – नमस्कार! मैं हरित लवक हूँ। मैं हरे रंग का होता हूँ। मैं पौधे के सभी हरे भागों में पाया जाता हूँ। पत्तियाँ मेरे रहने का प्रिय स्थान हैं।

पेड़– तीसरा जल। जल ओ जल। जल्दी आओ भाई अपने बारे में बताओ।

जल– नमस्कार! मैं जल हूँ। मुझे H_2O भी कहते हैं। मैं जड़ों द्वारा होती हुई पत्तियों तक पहुँचती हूँ। मैं अपने साथ खनिज लवण भी ले जाती हूँ।

राधा – अरे! कार्बनडाई ऑक्साइड तो कहीं दिखायी नहीं दे रही।

पेड़ – अरे !! कार्बनडाइ ऑक्साइड तो आप लोगों के ही बीच में है ।

कार्बन डाइ ऑक्साइड ओ कार्बन डाइ ऑक्साइड जल्दी आओ अपने बारे में बताओ ।

कार्बन डाइ ऑक्साइड– नमस्कार! मैं कार्बन डाइ ऑक्साइड हूँ। मैं आप लोगों के ही बीच में रहती हूँ। जब आप साँस बाहर छोड़ते हैं तब मैं बाहर निकलती हूँ।

राधा – अच्छा तो ये चारों मिलकर तुम्हारे लिये भोजन बनाते हैं।

पेड़– जी हाँ। भोजन ओ भोजन, भाई जल्दी आओ, अपने बारे में बताओ।

भोजन – नमस्कार! मैं भोजन हूँ। मेरा निर्माण प्रकाश संश्लेषण द्वारा होता है।

राधा – प्रकाश संश्लेषण में भोजन के अलावा कुछ और भी बनता है।

पेड़– जी हाँ। आप मनुष्यों के जीवित रहने के लिये प्राणवायु ऑक्सीजन भी प्रकाश संश्लेषण में निकलती है।

(ऑक्सीजन को सम्बोधित करते हुए)

ऑक्सीजन ओ ऑक्सीजन! जल्दी आओ भाई अपने बारे में बताओ।

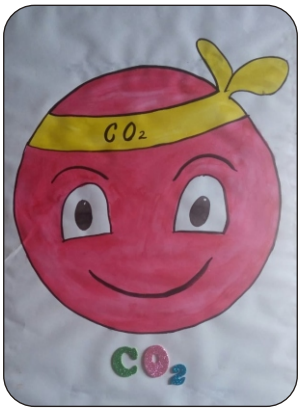

ऑक्सीजन– नमस्कार! मैं ऑक्सीजन हूँ। प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में मेरा भी निर्माण होता है। मैं आप मनुष्यों के जीवित रहने के लिये बहुत जरूरी हूँ।

राधा – अच्छा तो पेड़ हमारे जीवित रहने के लिये बहुत जरूरी हैं।

(सभी निम्नलिखित वाक्यों को एक साथ बोलते हैं)

इसलिए हम आप सबसे विनती करते हैं कि पेड़ों को मत काटो।

जागरूक बनिये, जागरूक बनाइए ।

पृथ्वी को बचाना है तो वृक्षारोपण अपनाइए॥"

नोट : प्रदर्शन के लिये सूर्य, हरितलवक, जल, कार्बन डाइ ऑक्साइड, भोजन एवं ऑक्सीजन के प्रदर्शन के लिये इस्माइली के चित्रों का प्रयोग किया गया।

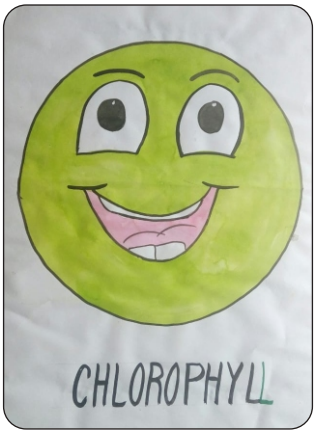

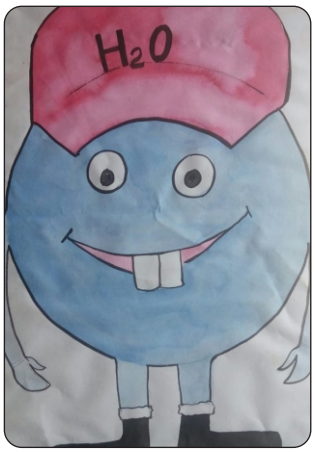

□□□

डॉ.खुर्शीद हसन, स.अ.
पू.मा.वि. बड़ागाँव हस्तिनापुर
झाँसी।

प्रेरक प्रसंग

चौधरी चरण सिंह

ये प्रसंग व्यक्तित्व के धनी एक ऐसे इन्सान का है जिनके नाई (घरेलू हजाम) की बेटी की शादी तय हो जाने पर वह उन्हें बताने गया उन्होंने बधाई दी और मदद के लिये पूछा तो नाई ने कुछ हजार रुपये माँग लिये। शादी में दो दिन कम थे नाई ने उनसे कहा कि कर्ज बहुत हो गया है मै उतारुँगा कैसे? उन्होंने कहा कि तुम चिंता मत करो शादी पर ध्यान दो मैं देख लूँगा।

फिर शादी वाला दिन भी आ गया सब लोग हैरत में थे। वो व्यक्ति सुबह से शाम तक शादी में सहयोग के लिये मिलने वाली धनराशि को लिखते रहे और शाम तक लाखों रुपये एकत्र हो चुके थे। लोग हैरान इस बात पर थे कि देश के प्रधानमंत्री अपने नाई की बेटी के लिये धनराशि एकत्र कर रहे थे और उन्होंने उस शादी को मिसाल बना दिया था एक सामाजिक सहयोग का।

जी हाँ बात कर रहे हैं किसानों के मसीहा और हमारे देश के पाँचवे प्रधानमंत्री माननीय श्री चौधरी चरण सिंह जी की, जिनका जन्म 23 दिसंबर, 1902 को बाबूगढ़ छावनी के निकट नूरपुर गांव, तहसील–हापुड़, जनपद–गाजियाबाद, कमिश्नरेट–मेरठ, में मिट्टी–फूस के छप्पर वाली मढ़ैया में रहने वाले एक साधारण जाट परिवार में हुआ था।

माननीय चौधरी चरण सिंह जी का कहना था ''असली भारत गाँवों में रहता है'' इस एक पंक्ति की व्यंजना कमाल है न। पढ़ने पर हमारा ध्यान जा सकता है गाँवों में रहने वाले लोगों उनके रहन–सहन, किसानों, उनके हालातों, खेत–खलिहानों इत्यादि पर और हम शिक्षकों का तो सबसे पहले ध्यान जाता है हमारे परिषदीय विद्यालयों पर। यूँ लगता है जैसे ये पंक्तियाँ हमारे विद्यालयों में बसने वाले भारत की कहानी बयां कर रही हैं। सच है न असली भारत तो हमारे परिषदीय विद्यालयों में ही बसता है तो आइये हम सभी मिलकर इस भारत के रंग को निखार दें। एक ऐसी मिसाल बना दें सामुदायिक सहयोग की जिसकी पकड़ कभी कमजोर न हो। विस्तृत कर दें भारत में ही भारत को। रोशन कर दें हर कोने को क्योंकि राष्ट्र का विकास तभी संभव हो सकेगा। जब हर बच्चा महफूज होगा। जब हर बच्चा स्कूल जायेगा। हर बच्चा सशक्त होगा। हर बच्चा खुशहाल होगा।

जय हिन्द जय भारत

□□□

संकलन
श्वेता सिंह (स.अ.)
प्रा.वि.हरिहर नगर
बेरुआरबारी, बलिया

सद्विचार

ईसा मसीह

संकलन
श्वेता सिंह (स.अ.)
प्रा.वि.हरिहर नगर
बेरुआरबारी, बलिया

अपने हृदय की क्षमा, दया और प्रेम की भावनाओं से अपने चेहरे को जितना सुंदर बना सकते हो,उतना किसी अन्य उपचार से नहीं।

प्रेम निष्कपट हो, बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो।

यदि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं।

तुम्हें इसका क्या श्रेय मिलेगा?

क्योंकि पापी भी उससे प्रेम करते हैं जो उनसे प्रेम करता है और यदि तुम उनका भला करते हो जो तुम्हारा भला करते हैं।

हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, लेकिन इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

यदि मनुष्य पूरी दुनिया का लाभ लेता है और अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचाता है, तो उसके लिए क्या लाभ होगा?

मनुष्य को सिर्फ रोटी के लिए नहीं जीना चाहिए, बल्कि ईश्वर के मुख से निकले हुए हर शब्द के मुताबिक जीना चाहिए।

अपने दिल को आफत में मत डालो। ईश्वर में भरोसा रखो, मुझमें भी भरोसा रखो।

लेकिन वो जो प्रभु में भरोसा रखते हैं उनकी शक्ति वापस आ जाएगी। वे बाज की तरह पंखों पर उड़ेगे, वे दौड़ेंगे और थकेंगे नहीं, वे चलेंगे और बेहोश नहीं होंगे।

चौकन्ने रहो, अपने विश्वास पर अडिग रहो, साहसी बनो, मजबूत बनो।

मजबूत और साहसी बनें। उनकी वजह से डरें या भयभीत न हों, क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा भगवान् तुम्हारे साथ जाता है, वह तुम्हें न कभी छोड़ेगा, न कभी त्यागेगा।

गट्टू

गट्टू कहानी है एक बाल मजदूर की गट्टू का किरदार मोहम्मद समद ने निभाया है और ऐसे निभाया है कि फिल्म देखकर आप उसके अभिनय के मुरीद हो जाते हैं।गट्टू एक शरारती बच्चा है जिसका बहाना बनाने में कोई जवाब नहीं। गट्टू एक कबाड़खाने में काम करता है जहाँ पर एक आदमी जिसे गट्टू अंकल कहता है वह गट्टू के मालिक की तरह व्यवहार करता है। गट्टू स्कूल नहीं जाता और उसे पतंगबाजी का शौक है। वह मोहल्ले के बड़े–बड़े बच्चों की पतंग काट देता है। एक दिन अचानक गट्टू देखता है कि एक काली पतंग उड़ती है जो बाकि पतंगों को काट देती है। गट्टू सारी पतंग काटने में एक्सपर्ट है लेकिन नहीं काट पाता है तो काली, हाँ काली। काली यानी वह पतंग जो एक चुनौती बनी हुई है पतंगबाजों के लिए। गट्टू काली को काटना चाहता है लेकिन काली को काटने के लिए उसे स्कूल की छत पर चढ़ना होगा। गट्टू कहीं से एक यूनिफॉर्म का इंतजाम करता है और स्कूल में जाने लगता है जहाँ से उसे पतंग काटनी है। उसके सामने कई चुनौतियाँ आती हैं। कभी उसे चोर भी समझा जाता है लेकिन

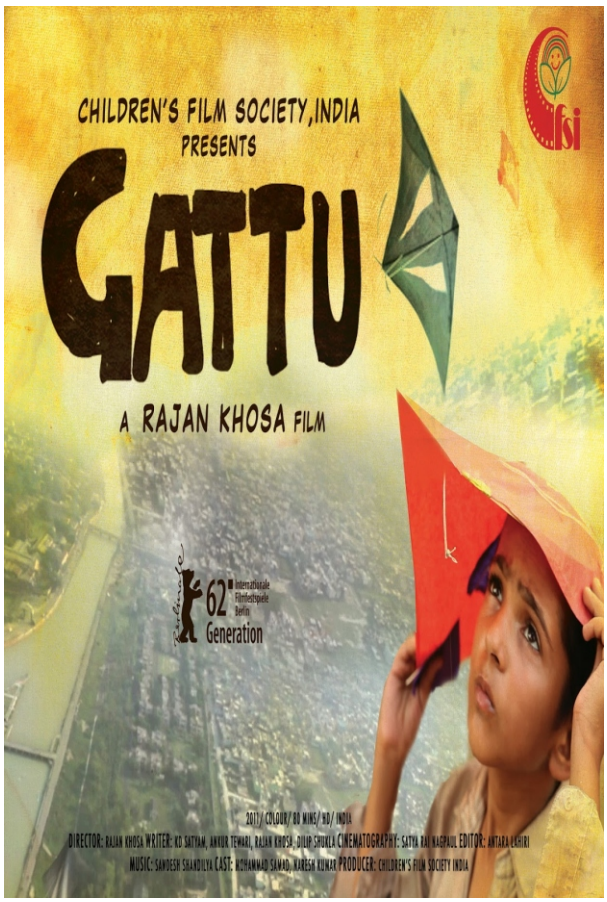

वह अपने आप को जासूस साबित कर देता है। बालपन को दर्शाती बिल्कुल एक अद्भुत कहानी है गट्टू। क्या गट्टू विद्यालय की छत पर चढ़कर काली को काट पाएगा? काली के पीछे कौन है? ये सब जानने के लिए आपको गट्टू देखनी ही होगी। अध्यापक, बच्चों और पतंगबाजी पर यह एक बहुत ही सुंदर फिल्म है जिसे देखकर बच्चों को बहुत आनंद आएगा तो अगली बाल सभा में आप बच्चों को गट्टू दिखा रहे हैं न?

बच्चों का कोना

चलो चलें इतिहास के पन्ने
आज पलटकर देखेंगे
कौन और कैसी थी रानी
आज परखकर देखेंगे

अल्प आयु में ही काम बड़े
कर जाना आसान नहीं
उस शूरवीर सा है कोई
आज गरजकर देखेंगे

अंग्रेजों की चालों पर जो
पलटवार कर जाती थी
उन रक्त के प्यासे गोरों का
आज कहर भर देखेंगे

अलख जगायी रानी ने थी
सत्तावन की नींव रखी
रानी और मर्दानी थी वह
आज नजर भर देखेंगे

लिये पुत्र को अंग धरे और
अश्व चढ़ाया गोरों पर
अपनी झांसी मैं न दूँगी
आज असर भर देखेंगे

श्रृद्धा सुमन चढ़ायें मिलकर
रानी लक्ष्मीबाई को
किसके मन में श्रद्धा कितनी
आज उतरकर देखेंगे

डा0 रश्मि दुबे,
प्राथमिक विद्यालय उस्मान गढ़ी,
जनपद–गाजियाबाद।

स्वच्छता गीत

आज से हम सबने ठाना है,
भारत को स्वच्छ बनाना है।

घर आँगन की करे सफाई,
खुले में शौच न जाना है।।

कूड़ा करकट करें इकट्ठा
डालें कूड़ेदान में ।

आओ सब सहयोग करे हम,
स्वच्छ भारत अभियान में।।

गलियों और सड़कों को बिल्कुल,
साफ स्वच्छ हमें रखना।

भारत माता का हर सपना।
पूरा हम सबको करना।।

स्वच्छता ही सेवा हमारी
धर्म यही है कर्म यही।

स्वच्छता पर ही निर्भर है
स्वर्ग यही और नर्क यही।।

खैनी गुटखा पान मसाला,
कोशिश करके छोड़िये।

थूक–थूक गन्दा न करिए
घर को स्वच्छ बनाइए।।

प्लास्टिक का प्रयोग न करना
बीमारी दूर भगाना है।

प्रदूषणमुक्त भारत का सपना
और उत्तम राष्ट्र बनाना है।।

साकेत बिहारी शुक्ल
सहायक अध्यापक
पू.मा.वि.कटैया खादर
ब्लाक– रामनगर, चित्रकूट

बच्चों का कोना

बेचारी सोन चिड़िया

—हरीओम सिंह

शिक्षण संवाद

एक जंगल में एक पेड़ पर सोन नाम की चिड़िया रहती थी जंगल बहुत घना था। जिस पेड़ पर सोन चिड़िया रहती थी उस पेड़ पर अन्य चिड़िया भी रहती थीं। सोन चिड़िया बेचारी किसी तरह अपना तथा अपने बच्चों का पालन–पोषण करती और कहीं भी जाती तो पेड़ के गुणों का बखान करती जो अन्य चिड़ियों को अच्छा नहीं लगता था। अन्य चिड़िया जहाँ भी जातीं जिस पेड़ पर रहती थीं उस पेड़ की बुराईयाँ किया करती थीं। एक दिन अन्य चिड़ियाँ बुराई कर रही थीं कि सोन चिड़िया आयी और सभी से कहने लगी कि अरे... भाई जिस पेड़ ने आपको संरक्षण दिया जहाँ आपका और आपका परिवार पलता है उसी की आप बुराईयाँ कर रहीं हैं ऐसा कार्य निन्दनीय है। तभी चिड़ियाँ नाराज हो गयीं और सभी ने उस बेचारी चिड़िया का साथ छोड़ दिया। सोन चिड़िया अपने पूरे परिवार के साथ पेड़ में बिल्कुल अकेली हो गयी। वह नित्य इस बात से चिन्तित रहा करती थी।एक दिन बेचारी चिड़िया अपने घोंसले में निराश बैठी थी। तभी उसी डाल से एक चींटी निकल रही थी। चींटी ने कहा कि सोन चिडिया आप इतना निराश क्यों हैं क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकतीं हूँ अरे...... तुम जाओ अपना काम करो तुम क्या मेरी मदद करोगी तुम्हें तो चिड़ियाँ खुद भोजन बना लेती हैं। कहकर चींटीं को ठुकरा दिया। तभी कुछ समय के बाद एक दिन उस जंगल में एक लकड़हारा पहुँचा और वह उस पेड़ की डालियाँ बारी–बारी से काटने लगा इस प्रकार सभी चिड़ियों की डालियाँ काट दीं। जिससे सभी चिड़ियों का घर तथा परिवार उजड़ गया और जैसे ही सोन चिड़िया की डाली काटने की तरफ लकड़हारा बड़ा तो वह चींटी देख रही थी और जैसे ही लकड़हारा उस डाली पर आया तो चींटी ने लकड़हारे के शरीर पर काटना शुरू कर दिया तभी लकड़हारे ने उस डाली को काटने का इरादा छोड़ दिया। इस प्रकार सोन चिड़िया का परिवार पूरी तरह से सुरक्षित बच गया तभी सोन चिड़िया आयी और चींटी से कहने लगी कि मैंने आपको छोटा समझकर आपका अपमान किया। इसके लिए मुझे क्षमा करें यदि आपने मेरी मदद न की होती तो मेरा परिवार तथा घर सब उजड़ जाता। इसीलिए किसी को भी छोटा नहीं समझना चाहिए इस संसार में न कोई छोटा है और न ही कोई बड़ा और सदैव जहाँ पर रहो वहाँ ईमानदारी के साथ रहना चाहिए।

☐☐☐

हरीओम सिंह,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पेरई,
विकास खण्ड–नेवादा,
जनपद–कौशाम्बी।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_49.html

अनमोल रत्न

शिक्षण संवाद

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय चौहड़पुर माफी, जनपद– अमरोहा से करा रहे हैं। जो एक सकारात्मक सोच और प्रयास करने वाले शिक्षकों का परिचय स्वयं करा रहा है।

कहने को तो हमारे अनेकों शिक्षक साथी यह कहते हैं कि क्या विद्यालय के परिवेश को आकर्षक बनाने से शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ जाती है? इस प्रश्न का उत्तर हमेशा की तरह हमारा हाँ ही रहता है क्योंकि हमारे शिक्षक साथी शायद यह भूल जाते हैं कि किसी बालक की शिक्षा के लिए चार महत्वपूर्ण कारक होते हैं जिनमें से एक परिवेश भी है। इसलिए परिवेश का मनोवैज्ञानिक प्रभाव उतना ही है जितना कि किसी अन्य कारक का अर्थात सीखने की प्रक्रिया में आकर्षक और अनुशासित परिवेश का प्रभाव 25% होता है। जिन्हें विश्वास न हो वह एक विद्यालय को आकर्षक और अनुशासित बनाकर अनुभव कर सकते हैं। जैसा कि विपिन कुमार सिंह जी ने अपने विद्यालय को आकर्षक और अनुशासित बनाकर हमारे जैसे हजारों शिक्षक साथियों को सीखने–सिखाने का अनुकरणीय अवसर प्रदान किया। इसके लिए विद्यालय परिवार को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ!

प्रा०वि०चौहड़पुरमाफी, वि०क्षे०– गजरौला, जनपद–अमरोहा विद्यालय में पदोन्नति उपरान्त वर्ष 2015 में जब मेरा आना हुआ तो उस समय विद्यालय का भौतिक एवं शैक्षिक परिवेश सही नहीं था। छात्र–छात्राओं का विद्यालय में ना आना व उनके अभिभावकों में विद्यालय शिक्षा के प्रति कुछ खास रुचि ना लेना था।

मैंने सर्वप्रथम विद्यालय की शिक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया व उनको समझाया कि छात्रों को विद्यालय में भेजे उसके उपरान्त विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति को बढाने व छात्रों के ठहराव हेतु भौतिक परिवेश को वर्तमान शैक्षिक मापकों के अनुरुप बदलने हेतु स्वयं व ग्राम प्रधान से विद्यालय में निम्न कार्य कराये।

1. समस्त विद्यालय में इण्टरलॉकिंग।
2. छात्रों के कक्षा कक्षों में उनकी आवश्यकता अनुसार शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण।
3. छात्रों को स्वच्छ पीने का पानी व हाथ धुलने हेतु मल्टी हैण्ड वाशिंग की सुविधा।
4. छात्र–छात्राओं के लिये अलग शौचालय का निर्माण।
5. छात्र–छात्राओं को नवीन टेक्नोलॉजी के आधार पर शिक्षा देने हेतु स्मार्टक्लास की व्यवस्था।
6. अनुपस्थित रहने वाले छात्रों के लिये स्वयं गाँव में जाकर उसकी अनुपस्थिति का कारण ज्ञात करना।
7. जब विद्यालय में आये थे तो नामांकन 32 था।
8. वर्तमान में विद्यालय में नामांकन 65 हो गया है और उपस्थिति 58 तक रहती है।

संकलनः
पंकज आर्य
मिशन शिक्षण संवाद अमरोहा

माह का मिशन

क्रिसमस में है कृष्ण मस्ती

—शिवम् सिंह

शिक्षण संवाद

जिंदगी में जीवन की गाड़ी प्रेम, समर्पण, त्याग और धैर्य के पहिये पर सरपट दौड़ती है। परंतु इस मशीनी जिंदगी में जीवन के इन चारों पहियों की हवा निकल चुकी है। जिसके फलस्वरूप जीवन की गाड़ी लड़खड़ा रही है।

हम मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों व् गिरजाघरों में मात्र अपने आपको संतुष्ट करने जाते हैं। आत्मा तो तभी संतुष्ट होता है जब किसी और के आत्मा को संतुष्टि प्रदान किया जाये।

इस संतुष्टि को प्राप्त करने का सबसे सरल व् सुलभ अवसर है हमारे ''पर्व''।

पर्व हमें मिल–जुलकर दुःख – सुख बाँटने का अवसर प्रदान करता है। ऐसा ही आत्मीय सुख की प्राप्ति हुआ करता था ''सेंट निकोलस'' को जब वे क्रिसमस पर गरीब, लाचार और असहाय बच्चों को उपहारों के माध्यम से खुशियाँ बाँटते थे।

आज हम आधुनिक जीवन में सेंट निकोलस को ''सांता क्लॉज'' के नाम से जानते हैं। पौराणिक और ऐतिहासिक दृष्टि से वे लोक कथाओं में प्रचलित एक व्यक्ति हैं। कई पश्चिमी संस्कृतियों में ऐसा माना जाता है कि सांता क्रिसमस की पूर्व संध्या, यानि 24 दिसम्बर की शाम या देर रात के समय के दौरान अच्छे बच्चों के घरों में आकर उन्हें उपहार देता है।

अब बात ये उठती है कि क्या वे मात्र एक व्यक्ति की विचारधारा थी कि बच्चों को खुशियाँ बाँटी जाएँ। क्या आज सभी बच्चे अपने बचपन का आनंद ले पा रहे हैं? उत्तर नहीं में मिलेगा।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गरीबी आज भी सुरसा की तरह मुँह खोले खड़ी है और इसकी भूख की भेंट चढ़ रहे हैं कई मासूम बच्चों का बालपन।

तो अब क्या कोई सांता क्लॉज नही आएगा इन बच्चों के बचपन को खुशियों से भरने के लिए?

अगर खोजा जाए तो ये जिम्मेदारी हर उस शिक्षक की है जिसे इन नौनिहालों को पढ़ाने और साक्षर बनाने का जिम्मा मिला है। आज भी भारत के परिषदीय विद्यालयों में मुख्यतः गरीब घरों के बच्चे पढ़ते हैं।

ध्यान से अगर इस पर्व के नाम को पढ़े तो ''क्रिसमस'' में हमें ''कृष्ण मस्ती'' नजर आता है। कृष्ण लीलाओं में बाललीला सबसे अद्भुत और प्यारा लगता है और यह लीला हर बालक करता है। अब ये उसके परिवेश पर निर्भर करता है कि क्या उसे ऐसा परिवेश मिला है कि वह बुनियादी जरूरतों को प्राप्त करते हुए यह लीलाएँ कर सकता हो।

मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से हमारा आप सभी से आह्वान है कि अपने अंदर एक सांता क्लॉज को जगायें जो इन बच्चों की सोयी खुशियों को जगमगा सके। स्मरण रहे की खुशियों के साथ दी गयी शिक्षा ज्यादा प्रभावी होती है। आपके द्वारा किया गया यह पुनीत कार्य राष्ट्र के निर्माण में अहम योगदान होगा। हर बच्चे के लिए उसका शिक्षक सांता क्लॉज बने।

शिवम् सिंह
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय लखेसर
सिकरारा जौनपुर

बात शिक्षिकाओं की

बालिका शिक्षा और स्वास्थ्य

–मृदुला वैश्य

एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत होने के नाते प्रत्येक वर्ष मेरा सामना किशोरावस्था में प्रवेश करती लड़कियों से होता है और साथ ही सामना होता है उनकी शारीरिक और मानसिक समस्याओं से।

कई लड़कियाँ समय से विद्यालय नहीं आतीं और परेशानी तब अधिक बढ़ जाती है जब कड़ाई करने पर देर से आने के बजाय घर बैठ जाती हैं। लड़कियों से बात करने पर पता चला कि उन्हें सुबह घर के सारे काम करने होते हैं जिसकी वजह से वे सब समय से विद्यालय नहीं आ पातीं और विद्यालय स्तर से भी कड़ाई करने पर उनके पास अंतिम विकल्प घर रुकना ही होता है। अंततः ऐसी लड़कियों को समय के बंधन से मुक्त करना मजबूरी लगती है पर ठीक भी तो है। आधे घंटे की देरी से विद्यालय आना ठीक है कम से कम बाकी के समय कुछ सीखने को तो मिलता है उन्हें। ऐसा नहीं है कि वह लड़कियाँ पढ़ने में कमजोर हैं बल्कि वह बाकी बच्चों से अधिक स्मार्ट हैं सब। देर से तो आतीं हैं पर पढ़ने में ध्यान भी अधिक लगातीं हैं। कोई विषय वस्तु न समझ में आने पर जब जबरदस्ती 'हाँ' कहती हैं और मैं उनकी भाव–भंगिमा समझकर प्रकरण को दो–तीन बार समझाती हूँ तो उनमें से कोई एक पूछ देती है–''मैम आपको कैसे पता चला कि ये पूरा समझ नहीं आया था?'' अब उन्हें क्या बताना कि हम सभी शिक्षक इन बच्चों का मनोविज्ञान समझते हैं।

मेरा और मेरे स्टाफ का प्रयास रहता है कि ये लड़कियाँ अपने घर–परिवार ही नहीं बल्कि अपने क्षेत्र का भी नाम रोशन करें।

स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी मुद्दों पर चर्चा करने और अच्छी आदतें सिखाने का असर सकारात्मक दिखता है उन सब पर। पहले की अपेक्षा अधिक तरीके से विद्यालय आती हैं और व्यक्तिगत सफाई का विशेष ध्यान रखती हैं सब।

उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी ध्यान रखना पड़ता है और बहुत सारी बातों को समझाना भी पड़ता है। मैं नहीं चाहती कि वह अपने परिवार में वर्षों से चली आ रही कुरीतियों को ढोयें और अंधविश्वास की जड़ें बढ़ायें। इसके लिए उनका पढ़ना, किसी भी मुद्दे पर अपने तरीके से सोचना और गलत को अस्वीकार करने की क्षमता रखना जरूरी है। साथ ही जरूरी है उनका आत्मविश्वास बढ़ाना जो एक बेहतर माहौल में ही संभव है।

इस दिशा में मेरा यही प्रयास रहता है कि उन्हें कम से कम विद्यालय में ऐसा माहौल दिया जाए जहाँ वह मनोरंजक तरीके से पढ़ें, खुलकर मुस्कुरायें, खिलखिलायें और साथ ही अपने सुनहरे भविष्य के सपने सजायें।

ऐसी मेधावी बच्चियों के लिए सबकुछ तो नहीं कर सकती परंतु अधिक से अधिक करने का प्रयास करती हूँ ताकि अक्षर ज्ञान के साथ वह कुछ व्यवहारिक ज्ञान और हुनर भी सीख सकें.....

'बेटियाँ हैं हमारा सम्मान,
बेटियाँ हैं हमारा अभिमान,
बेटियाँ हैं ईश्वर का वरदान,
बेटियाँ हैं घरों की जान.....'

□□□

मृदुला वैश्य
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मीठाबेल
विकास खण्ड–ब्रह्मपुर
जनपद–गोरखपुर।

कस्तूरबा विद्यालय में बालिकाओं की परिवर्तित जीवन शैली

–प्रवीणा दीक्षित

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है।यह न केवल प्राकृतिक पदार्थों में अपितु प्राणियों के हर जीवन क्षेत्र में अपरिहार्य रूप से उपस्थित होता है। ये बात अलग है कि बुद्धिजीवी होने के नाते मानव इन परिवर्तनों को न केवल देखता और अनुभव करता है वरन उनके नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण भी करता है।

हमारे उत्तर प्रदेश में 746 कस्तूरबा विद्यालय संचालित हैं जिसका उद्देश्य सुदूर गाँवों में रहने वाली साधनहीन बालिकाओं को शिक्षित करके उनकी दशा और दिशा बदलकर सामाजिक धारा में मुख्य स्थान दिलाना है।

के.जी.बी.वी. विद्यालयों के माध्यम से बालिकाओं को अपने भावी जीवन के लिए उपयोगी बनाना ही इस संस्था का दूरगामी लक्ष्य है।

आइए, हम विचार करें कि किन बिंदुओं के माध्यम से बालिकाओं पर किए जा रहे इन अनूठे शैक्षिक प्रयोगों का क्या परिणाम निकला।

1. रहन–सहन का स्तर और सामाजिक विकास –

सामान्य तौर पर गाँव–देहातों में रहने वाली बालिकाओं को क्षीण साधनों में रहकर जब इन विद्यालयों की छात्रा के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करती दिखाई देती हैं तो स्पष्ट रूप से सामाजिक विकास के क्षेत्र में पर्याप्त अंतर उपस्थित हो जाता है। अपनी सहपाठी छात्राओं के साथ 'हम' भावना तो विकसित होती ही है साथ ही बालिकाओं का निजी व्यक्तित्व भी विकास की ओर अग्रसर होता है।

2. शारीरिक विकास और विद्यालय का वातावरण –

सामान्य घरों से नितांत अलग के.जी.बी.वी. विद्यालयों का वातावरण आने वाली बालिकाओं को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता दिखाई पड़ता है। खाने–पीने की सुखद सुविधा के साथ–साथ व्यायाम और खेलकूद के प्रति अभिरुचि उन्हें स्वस्थ बालिका के रूप में प्रस्तुत करती है। अस्वस्थ होने पर चिकित्सिक सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये बालिकाएँ समाज की अन्य बालिकाओं की अपेक्षा उत्तमतर होतीं हैं।

3. नैतिक मूल्यों का निर्वहन –

के.जी.बी.वी. परिवार अपनी बालिकाओं को कुशल नागरिक बनाने को तत्पर है। भारतीय संविधान में चर्चित मूल्य है– समानता, सहृदयता, वाणी और अवसरों की स्वतंत्रता, कर्तव्यों और अधिकारों का सम्यक ज्ञान, राष्ट्र प्रेम,

विश्व बन्धुत्व की भावना, सर्व धर्म समभाव ,धर्म निरपेक्ष चिंतन आदि ऐसे भाव हैं जो हमारी बालिकाओं में स्थायी रूप से स्थापित किए जाते हैं। बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य में काफी अंशों तक सफलता भी प्राप्त हुई है।

4. धर्म और धर्मनिरपेक्षता का दृष्टिकोण –

भारतवर्ष आस्थाओं का देश है लेकिन हमारी संवैधानिक स्थापना है कि कोई भी व्यक्ति अपने पंथ अथवा मत मानने में समर्थ है। इन विद्यालयों में विभिन्न जाति, वर्ग और धर्म से आई हुईं बालिकाएँ अपने मतों के प्रति श्रद्धा रखते हुए भी 'सर्वधर्म समभाव' के विचारों से जुड़कर भारत के श्रेष्ठ नागरिक के रूप में अपना विकास कर रही हैं।

5. सर्वांगीण विकास का दृष्टिकोण और उसका प्रतिफलन –

वैसे तो शिक्षा का उद्देश्य 'बालक का सर्वांगीण विकास और उसकी अंतर्निहित सुंदरतम शक्तियों का उद्घाटन है' लेकिन यह सिद्धांत वाक्य के.जी.बी.वी. में सीधे पटल पर प्रतिफलित होते दिखाई पड़ता है।

विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से स्वतंत्र भाव प्रकाशन की क्षमता, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं, कवि–दरवारों, निबंध प्रतियोगिताओं, बाल सभाओं व नुक्कड़ नाटकों आदि के माध्यम से उनके उपयोगी विचारों का न केवल विकास होता है, अपितु उनकी मूल–प्रवृत्तियों का शोधन और मार्गान्तरीकरण भी होता है।

6. नागरिकता का विकास –

आज की बालिकाएँ कल जीवन के हर क्षेत्र में समाज का प्रतिनिधित्व करेंगी। इसलिए इन बेटियों को कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान कराया जाता है। समय–समय पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व कर रहे अंगों को विद्यालय में आमंत्रित कर उनकी उपलब्धियों को बालिकाओं के सामने व्याख्यायित कर सुंदर व सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जाती है।

निश्चय ही के.जी.बी.वी. इन बेटियों को शून्य से शिखर की ओर पहुँचाने के लिए अपने पूरे समर्पण के साथ जुटे हुए हैं।

''आने वाले भारत की तस्वीर बनेगीं ये,
खुद ही अपने जीवन की तकदीर बनेंगीं ये।
और बनेगीं यही अपाला, गार्गी, घोषा भी,
झाँसी की रानी की शमशीर बनेंगीं ये।

□□□

प्रवीणा दीक्षित
के.जी.बी.वी
नगर क्षेत्र कासगंज।

योग–विशेष

योग एवं समग्र स्वास्थ्य

–डॉ० मीतू सिंह

शिक्षण संवाद

जिनका शरीर व्याधियों से पीड़ित नही है उन्हें भी पूर्णतया स्वस्थ कहना उचित नहीं होगा। स्वास्थ्य की परिभाषा ये कहती है कि शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न, इन्द्रियाँ नियन्त्रित एवं सभी दोष, धातुएँ, मल व अग्नि समभाव में हों।

विश्व स्वास्थ्य संगठन भी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को ही पूर्ण स्वास्थ्य मानता है।

योग केवल आसन–प्राणायाम की प्रक्रिया नहीं है बल्कि मानवीय चेतना पर छाये आवरण को हटाना है।

जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है चेतना। चेतना ही ज्ञान प्राप्त करती है। योग चेतना का विकास करता है। योग एक साधना है जिससे आत्मा को सुख का अनुभव होता है। तीन प्रकार के दुःखों– शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुःखों से बचने का एकमात्र उपाय योग है। योग दुःखों से मुक्ति–मोक्ष दिलाता है। योग मन और इन्द्रियों को स्थिर करता है और मन को शांत करता है। योग द्वारा हमारी शक्तियाँ, क्षमताएँ, विकसित होती हैं, जिससे हमारा विकास तेजी से होता है।

अस्वस्थता के पीछे चार कारण हैं–

1. आहार (भोजन)
2. विहार (रहन–सहन, दिनचर्या,व्यायाम)
3. भावनाएँ (सकारात्मक व नकारात्मक)
4. प्रारब्ध (संचित कर्म संस्कार)

योग ही एकमात्र ऐसा उपाय है जो अस्वस्थता के इन कारणों को सन्तुलित ही नहीं करता है अपितु हमें समग्र स्वास्थ्य अर्थात शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक सभी स्तरों पर स्वस्थ बनाता है। समग्र स्वास्थ्य प्रदान करता है।

डॉ० मीतू सिंह
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय भूड़ा कला
ब्लॉक
मोहम्मदी
जनपद लखीमपुर खीरी

शिक्षा में खेल का महत्व

–गीता भाटी

जिस तरह से शिक्षा का हमारे जीवन में अद्वितीय योगदान है इसी प्रकार खेल का भी महत्व कम नहीं है। विद्यार्थी जीवन में पाठ्यक्रम की जटिल प्रक्रियाओं से गुजरते हुए जो तनाव प्राप्त होता है। उसी तनाव से मुक्त होने के लिए हमें अपने जीवन में खेल को महत्व देना चाहिए। हमारे पूर्वज भी शरीर को स्वस्थ रखने की दृष्टि से खेल को नितान्त आवश्यक मानते थे। खेल से हम अपने मन मष्तिष्क का समुचित विकास करते हैं। खेलने से शरीर पुष्ट होता है। शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है।

अतः भाव यह है कि खेलकूद से शरीर की आन्तरिक क्रियाएँ उचित प्रकार से होती रहती हैं। सुबह ताजी हवा में घूमने और खेलने से फेफड़ों को उचित मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। व्यायाम और खेल शरीर को स्वस्थ रखने की सस्ती और सरल प्रक्रिया हैं। हमें अपने जीवन में कोई न कोई एक खेल अवश्य खेलते रहना चाहिए। आज के आधुनिक युग में खेल में विभिन्न प्रकार के जीवन यापन के रास्ते खुले हैं। हम अपने राज्य–राष्ट्र के लिए खेलकर नाम कमा सकते हैं। खेल से अनुशासन, संगठन, पारस्परिक सहयोग, साहस, विश्वास, सामाजिकता तथा आज्ञाकारिता का विकास होता है।

खेल एक ऐसा विषय है जिसमें हम सब बचपन से ही रुचि रखते आये हैं। खेल सिर्फ मनोरंजन और मस्ती के लिए नहीं खेल हमारे शरीर और मानसिक स्तर को बढ़ावा देता है। एक छोटा बच्चा भी यदि बचपन से ही अपने प्रिय खेल का अभ्यास करें तो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी बन सकता है। ऐसे बहुत से खिलाड़ी हैं। जैसे सचिन तेंदुलकर, मिल्खा सिंह, अभिनव बिन्द्रा। इनके साथ–साथ लड़कियों ने भी अपनी मेहनत से खुद को आगे करके खेल में अपना नाम बनाया है और लोगों को बतलाया है कि लड़कियाँ भी किसी क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं। अगर हम सब अपनी सोच को विकसित करें और उनका मनोबल बढ़ायें तो वे अपना व अपने देश का नाम रोशन कर सकती हैं। मैं धन्यवाद करना चाहती हूँ उन माताओं और पिताओं को जिन्होंने समाज से लड़कर अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने में उनके मनोबल को बढ़ाया है। तभी पी0वी0 सिंधू बैडमिंटन, मैरीकॉम बॉक्सिंग, साइना नेहवाल बैडमिंटन, गीता फोगाट कुश्ती
ऐसी कई महिला खिलाड़ियों ने हमारे देश का नाम रोशन किया है।
मैं यही चाहती हूँ कि हम सब बेटियाँ भी अधिक से अधिक खेलों में भाग लें और देश का नाम रोशन करें।

गीता भाटी
प्रधान अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय सलेमपुर
गुर्जर नं 1
ब्लॉक दनकौर
गौतम बुद्ध नगर

परिषदीय विद्यालयों के कायाकल्प को समर्पित एक दानवीर

जहाँ व्यक्ति का बचपन बीतता है उसकी पगडण्डी और माटी की खुशबू भूलना कठिन है। इसी कारण गाँव से लगाव स्वाभाविक है और गाँव का विकास इनके जीवन के लक्ष्यों में शामिल है।
ज्ञान प्रकाश सिंह का नाम आज मुम्बई के जाने–माने उद्योगपतियों में शुमार होता है। इन्होंने शून्य से शिखर तक का सफर अपनी मेहनत और लगन से प्राप्त किया।
''कुछ लोग समय की धारा में अपनी मर्जी कर लेते हैं।
प्रतिफल भले हो सब लेकिन, तकदीर अपनी गढ़ लेते हैं।''
यह बात ज्ञान प्रकाश सिंह पर अक्षरशः लागू होती है। 1982 में मुम्बई आगमन हुआ और केंद्र सरकार के पी० – टी० विभाग में नौकरी शुरू की लेकिन इनके जीवन का उद्देश्य कारोबारी बनना था। ज्ञान प्रकाश सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद जौनपुर के गोधना (इलिमपुर) गाँव में श्री श्रीनाथ सिंह के घर हुआ। बचपन गाँव में बीता पढाई–लिखाई करने के तुरन्त बाद उनकी नौकरी मुम्बई में भारत सरकार के पी०–टी० विभाग में लग गयी। दो ढाई साल बाद इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर एक इंटीरीयर डेकोरेशन के क्षेत्र में कमीशन आधार पर एक कम्पनी में काम करना शुरु किया और कुछ ही समय में उस कम्पनी को लाखों का काम दिलाया। उसी दौरान एक उद्योगपति की सलाह पर इन्होने 1985 में मॉडर्न सिक्योरिटी फोर्स नाम की कम्पनी शुरु की। इसकी शुरुआत महज 10 से 12 कर्मचारियों से की जो अब एक वटवृक्ष बन चुका है और आज देश में एक नामचीन कंपनी है। आज पूरे देश में लगभग 30 हजार कर्मचारी मॉडर्न सिक्युरिटी द्वारा विभिन्न कॉरपोरेट सेक्टर एवंम इण्डस्ट्रीज में कार्यरत है।
सुरक्षा के अलावा हाउस कीपिंग एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अपनी दूसरी कंपनी मॉडर्न फैसेल्टीज एंड मॉडर्न इन्फॉर्मेटिक्स के माध्यम से आज ज्ञान प्रकाश सिंह हजारों लोगों को रोजगार मुहैया करवा रहे हैं। ग्राम गोधना जौनपुर व कांदिवली मुंबई के ठाकुर विलेज निवासी ज्ञान प्रकाश सिंह के परिवार में पत्नी श्रीमती रीना सिंह पुत्र अमित सिंह सुमित सिंह सहित पोता पोती भरा पूरा परिवार है। कारोबार के साथ ही साथ आपका जुड़ाव राजनीति से भी रहा। सन 1991 से 1995 तक भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा विले पार्ल विधान सभा के अध्यक्ष रहे। कारोबार व राजनीति के साथ इनका सामाजिक लगाव भी काफी अधिक रहा जिसकी वजह से भारत सरकार ने अपने विभिन्न मंत्रालयों की समिति में गौरवपूर्ण सदस्य नियुक्त किया जैसे
हिंदी सलाहकार समिति (राज भाषा) सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय भारत सरकार।
केयर बोर्ड भारत सरकार
ZRUCC मध्य रेलवे
राज्य स्तरीय समन्यव समिति भारतीय खाद्य निगम (FCI) इत्यादि।
श्री ज्ञान प्रकाश सिंह कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हुए हैं और सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। आप श्रीमती अमरावती श्रीनाथ सिंह चौरिटेबल ट्रस्ट के न्यासी (ट्रस्टी) भी है। इनके सामाजिक योगदान को देखते हुए अब तक कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।
जो इस प्रकार हैं:

राष्ट्र शक्ति अवार्ड 2006
विशिष्ट प्रतिभा सम्मान 2011. माननीय श्री पृथ्वीराज चौहान मुख्यमंत्री महाराष्ट्र सरकार) द्वारा सम्मानित।
श्री साई रत्न अवार्ड 2015
केवल सच बिरसा मुंडा सम्मान 2016 रांची झारखण्ड।
मुंबई रेडियो सिटी आइकॉन अवार्ड 2018
प्राइड ऑफ उत्तर प्रदेश अवार्ड 2018 लखनऊ का पुरस्कार शामिल है।
ज्ञान प्रकाश सिंह समय–समय पर जरुरतमंदों की मदद भी करते रहते हैं। अभी हाल ही में इन्होंने जिला अस्पताल में एक डीलक्स शौचालय का निर्माण कार्य कराया तथा जिले के ग्रामवासियों की चिकित्सा सुविधा के लिए एक मोबाइल वैन दिया जिसमें एक डॉक्टर, एक सहायक के साथ निः शुल्क जाँच व दवाइयों की व्यवस्था की गयी है जिसका उद्घाटन कैबिनेट मंत्री माननीया डॉ रीता बहुगुणा जोशी के कर कमलों द्वारा दिनांक 12.09.2018 को सम्पन्न हुआ।
इसके साथ साथ आपने अपने पैतृक गाँव गोधना (इलिमपुर) में सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय का जीर्णोद्धार कराकर सूबे के एक मॉडल स्कूल के रूप में बनवाया है जिसका जल्द ही उदघाटन होने वाला है।
गाँव के प्रति प्रेम पर श्री सिंह जी कहते हैं जहाँ व्यक्ति पला बढ़ा होता है और जहाँ व्यक्ति का बचपन बीतता है उसकी पगडण्डी और माटी की खुशबू भूलना कठिन है। इसी कारण गाँव से लगाव स्वाभाविक है। मुझे जब भी मौका मिलता है अपने गाँव में कुछ कार्यक्रम करता रहता हूँ। गाँव के विकास पर उनका कहना है कि आज भी गाँव विकास में काफी पिछड़ा है गाँव के युवा ना केवल डिग्री लें बल्कि वे टेक्नोलॉजी के प्रति सजग हों ताकि वो वर्तमान स्पर्धा के युग में अपने आपको खड़ा कर सकें। इसके लिए गाँव में शिक्षा का समुचित प्रचार–प्रसार होना जरुरी है।
अपने पैतृक गाँव जहाँ पर बचपन में शिक्षा ग्रहण किया प्राथमिक विद्यालय गोधना मे उस विद्यालय का कायाकल्प करने के लिए कार्य कर रहे हैं।
आज विद्यालय में –

★CCTv कैमरा
★सुंदर बोलती दीवारें
★डेस्क बेंच
★TLM
★कंप्यूटर कक्ष
★स्मार्ट क्लासरूम
★सुंदर और आधुनिक शौचालय
★MDM की उत्तम व्यवस्था
★बच्चों के लिए पार्क
★खेलकूद के सभी सामग्री इत्यादि उपलब्ध हैं।
इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी जौनपुर के विशेष आग्रह पर जौनपुर जिला अस्पताल में जनता हेतु उच्च स्तरीय सार्वजनिक शौचालय का निर्माण कराकर सरकारी कार्य में सहभागी बनने का कार्य करके यश प्राप्त कर रहे हैं। ज्ञान प्रकाश सिंह का कहना है कि अभी भी गाँवों मे बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो अस्पताल तक नहीं पहुँच पाते हैं या फिर पैसों के कारण अपना इलाज नहीं करा पाते हैं। ऐसे लोगों की सेवा के लिए मैंने निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा शुरु किया है। इस बारे में समाजसेवी ज्ञान प्रकाश सिंह कहते है कि, ''आज मैं जो भी हूँ अपने पूर्वजों के आशीर्वाद के कारण हूँ।''

परिषदीय विद्यालयों में धूमधाम से मनाया गया बाल दिवस

शिक्षण संवाद

नवम्बर माह में बाल दिवस का आयोजन विद्यालयों में बड़ी धूमधाम से किया गया। कहीं बाल मेले लगाये गये तो कहीं बाल अखबार निकाले गये। बड़ों को अपना बचपन याद आया तो बच्चों के लिये नयी स्मृतियाँ बनीं। जैसा कि माह नवम्बर की पत्रिका में माह के मिशन के तौर पर बाल अखबारों में दीपावली पर बच्चों के अनुभवों को सम्मिलित करने का आग्रह किया गया था। उसे कई विद्यालयों ने अपनाया।

दीपावली पर भी कई विद्यालय सजाये गये और प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित हुईं। कहीं बच्चों को मिठाई खाने को मिली तो कहीं जमकर खेलने का आनन्द मिला। कुल मिलाकर बच्चों की मौज रही।

JAWAHARLAL NEHRU
MAHATMA GANDHI

An ISO 9001:2008 Certified
PRIMARY SCHOOL TITAWI NO-1
Block Baghra Distt. Muzaffarnagar (U.P.)

Happy Children's Day

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय

चतुर्थ अंक
17-11-2018
बाल अखबार
U.P.S
सूर्य
संजना मिश्रा

दिसम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

1 दिसम्बर : विश्व एड्स दिवस (वर्ल्ड एड्स डे)

सबंधित जानकारी : वर्ष 1988 से प्रत्येक वर्ष 01 दिसंबर विश्व एड्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। सयुंक्त राष्ट्र द्वारा चलाए गए इस अभियान का उद्देश्य विश्व स्तर पर एड्स के बारे में जागरूकता फैलाना है।

2 दिसम्बर : अंतर्राष्ट्रीय दास प्रथा उन्मूलन दिवस

4 दिसम्बर : नौसेना दिवस (नेवी डे)

सबंधित जानकारी : हर देश में नौसेना दिवस अलग–अलग तिथियों को मनाया जाता है भारत में "4 दिसम्बर" को नौसेना दिवस घोषित किया गया है इस दिन को भारत–पाक युद्ध 1971 में भारतीय नौसेना के योगदान तथा जीत के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

7 दिसम्बर : भारतीय सशस्त्र सेना झण्डा दिवस, अंतर्राष्ट्रीय नागरिक विमानन दिवस (आईसीएओ)

9 दिसम्बर : अंतर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार–रोधी (निरोधी) दिवस

10 दिसम्बर : विश्व मानवाधिकार दिवस (ह्यूमन राइट्स डे)

सबंधित जानकारी : 10 दिसंबर अंतराष्ट्रीय स्तर पर विश्व मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है सयुंक्त राष्ट्र द्वारा घोषित इस दिवस का उद्देश्य मानवाधिकारों की रक्षा करना व उन्हें विश्व स्तर पर बनाए रखना है।

18 दिसम्बर : अल्पसंख्यक अधिकार दिवस (माइनॉरिटी राइट्स डे)

20 दिसम्बर : अंतरराष्ट्रीय मानव एकता दिवस

22 दिसम्बर : राष्ट्रीय गणित दिवस

23 दिसम्बर : किसान दिवस (फार्मर्स डे)

सबंधित जानकारी : भारत में प्रत्येक वर्ष 23 दिसंबर को राष्ट्रीय स्तर पर किसान दिवस मनाया जाता है भारत के गाँवों में रहने वाली 75% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है देश की जनसंख्या के इस हिस्से के विकास तथा कृषि के बारे में जागरूकता फैलाना ही इस दिवस का उद्देश्य है।

23 दिसम्बर : किसान दिवस (भारत) (चौधरी चरण सिंह जन्म दिवस),

24 दिसम्बर : राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस (नेशनल कंज्यूमर्स डे)

25 दिसम्बर : महामना मालवीय जन्मतिथि (तारीखानुसार), ईसा मसीह जयंती / क्रिसमस–डे

29 दिसम्बर : विश्व जैव विविधता दिवस

एकलव्य

शिक्षण संवाद

शिक्षण तकनीकी में हम इस बार बात करेंगे एकलव्य की। एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं, जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इसमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम भूमिका निभाती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इस संस्था ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका ''चकमक'' के अलावा ''स्रोत'' (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा ''संदर्भ'' (शैक्षिक पत्रिका) नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ. सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं। जिन्हें आप इस लिंक से पीडीएफ के रूप में डाउनलोड कर सकते हैं–

https://www.eklavya.in/books/eklavya-books-pdf

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

विनोद कुमार, प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय चककलूटी, ज्ञानपुर भदोही

पीएस चककलूटी करे आदाब।
जितने भी बैठे हैं जनाब।
78, 82, 85 प्रतिशत औसत हिसाब
शत प्रतिशत का है ख्वाब।

पिछली स्थितियाँ औसत थीं।
सब सुविधाएं सलामत थीं।
हमें अच्छी मिली विरासत थी।
पर छात्र उपस्थिति 50 ही प्रतिशत थी।

हमने उपस्थिति कैसे बढ़ायी।
कौन–कौन सी विधि अपनायी।
थी क्या स्थिति पहले भाई,
सुनें सभी साहब लौ लाई।

राज्य ने जब ये योजना लायी।
अंग्रेजी माध्यम से हो पढ़ाई।
आशा मन में फिर ये छायी।
करुँ नया अभी है तरुणाई।

पहुँचे हम चककलूटी के द्वार।
साथ मिले और साथी चार।
सबने मिलकर किया विचार।
स्कूल बनाएँगे शानदार।

जुटे सभी हर दिन हर बार।
समय सारणी के अनुसार।
बाकी चीजें दिये बिसार।
सिर्फ पढ़ाई प्रथम नवाचार।

रहे नहीं जो छात्र उपस्थित।
हर बस्ती हर घर कर चिह्नित।
शिक्षक दल सम्पर्क करें नित।
द्वितीय लक्ष्य अभिभावक जाग्रत।

विद्यालय में हो अनुशासन।
नियमित कक्षा नियमित पाठन।
नियमबद्ध हो कार्य प्रशासन।
अभिलेख संस्कृति तृतीय पदार्पण।

चतुर्थ एमडीएम का प्रयोजन।
गुणवत्तापूर्ण मानक भोजन।
प्रेरित प्रतिनिधि दिये आश्वासन।
शिक्षक छात्र करें संग में सेवन।

पंचम क्रिया गतिविधि और खेल।
नवाचार बचपन का मेल।
मिली सफलता रेलमरेल।
पब्लिक स्कूल के इंजन फेल।

जब शिक्षण आकर्षण घटा।
छात्रों पर फैली तकनीकी घटा।
कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, मोबाइल बँटा।
शिक्षक सहयोगी निरखें छटा।

तरीकें अनगिनत हैं हुजूर।
छात्र अनुपस्थिति करने को दूर।
परिस्थिति पात्र स्थान अलग जरूर।
पर जज्बा भरें करें भरपूर।

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

क्रमशः अगले अंक में.....

दैनिक श्यामपट्ट कार्य– सफलतम एक वर्ष

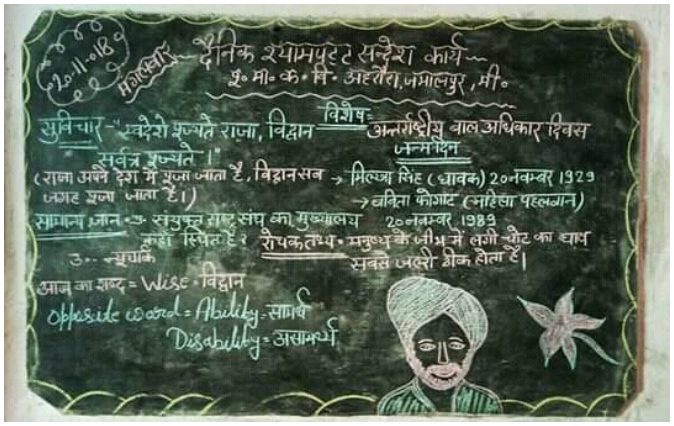

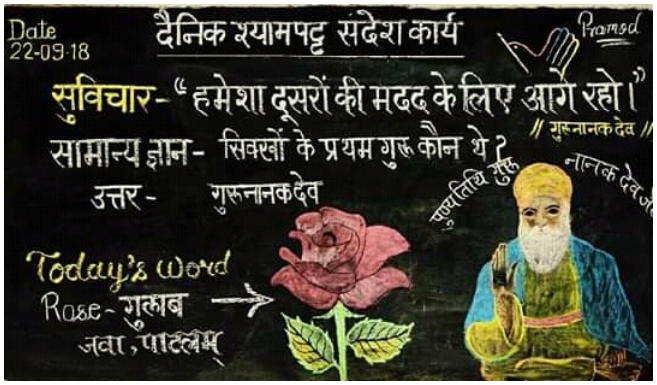

दोस्तों, नमस्कार

बच्चों और आप सबके पसंदीदा कार्य दैनिक श्यामपट्ट को 27.11.2018 को एक वर्ष पूर्ण हो गए हैं।

दैनिक श्यामपट्ट से लाभ–

1:– दैनिक श्यामपट्ट से बच्चों को नित नई जानकारी प्राप्त होती है।इसके अंतर्गत एक सुविचार, सामान्य ज्ञान का प्रश्न, शब्दार्थ, विशेष–दिवस, पहेली दिये जाते हैं। इससे बच्चों में रुचि उत्पन्न होती है।

2:– दैनिक श्यामपट्ट ने समय समय पर अनेक रुचिकर कार्य दिए हैं, जैसे– अप्रैल माह में स्कूल चलो अभियान के अंतर्गत विशेष स्लोगन, अगस्त माह में रोचक तथ्य, अक्टूबर माह में तर्कशक्ति आदि। बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय आने की आदत पड़ती है।

3:– अक्टूबर माह से दैनिक श्यामपट्ट प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर दोनों तरह का बनाया जा रहा है। यह बच्चों का लेख सुधारने में काफी सहायक है।

निवेदन

1:– आप सभी शिक्षकों से निवेदन है कि दैनिक श्यामपट्ट को बच्चों तक अवश्य पहुँचाएं।

2:– जब भी आप दैनिक श्यामपट्ट को शेयर करें, तो यह देख लें श्यामपट्ट में कोई गलती तो नहीं है।

3:– दैनिक श्यामपट्ट को करने से पूर्व श्यामपट्ट को अच्छी तरह से साफ कर लें,ताकि पिक्चर क्वालिटी अच्छी आए। श्यामपट्ट के साथ बच्चों की कापियां भी शेयर करें।

4:– हर माह के अन्त एक पेपर होता है जो बच्चों में परीक्षा की भावना और भय समाप्त करता है।

सहयोग व संकलन– दैनिक श्यामपट्ट टीम
मिशन शिक्षण संवाद

नवरात्र में भण्डारे का आयोजन

टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश द्वारा दिनांक 18–10–2018 को नवरात्र के उपलक्ष्य में लगातार चौथी बार माताराणी का भंडारा आयोजित कराया गया। प्रतिवर्ष आयोजित भंडारा सामाजिक पर्वों के जरिये शिक्षकों द्वारा समुदाय को जोड़ने और आपसी मेल मिलाप के रूप आयोजित किया जाता है। भंडारे में टीचर्स क्लब के अध्यक्ष श्री शशिभूषण जी, महामंत्री अवनीन्द्र जादौन जी, संयोजक प्रांजल दुबे, कार्यकारिणी पदाधिकारी मुकेश बाबू, श्याम किशोर राजपूत, मुकेश यादव, अनूप दीक्षित, विजय तिवारी, अरुण कुमार पांडेय, जिला समन्वयक मध्यान्ह भोजन अरुण कुमार आदि का विशेष योगदान रहा।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6– व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7– ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8– वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात